Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 2, March-2024,(Special Issue), ISSN 2230-7540

अमृता प्रीतम के उपन्यासों में नारी विमार्श

Shalu Parik[1]*, Dr. Rajbala[2]

[1] Research Scholar, Jyoti Vidyapeeth Mahila Vishwavidyalaya, Jaipur, Rajasthan, India

Email: shalusoni201291@gmail.com

[2] Research Guide, Jyoti Vidyapeeth Mahila Vishwavidyalaya, Jaipur, Rajasthan, India

सार – *अमृता प्रीतम को उनकी प्रेम भरी कविताओं, कहानियों और जीवन घटनाओं के लिए साहित्य जगत में प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। अमृता प्रीतम का उपन्यास 'पिंजर' नारी विमर्श के समस्त घटकों की प्रस्तुति करता है। यह महिलाओं की वास्तविक स्थिति को उजागर करने वाला उपन्यास है। अमृता प्रीतम ने महिलाओं के दृष्टिकोण से विभाजन की कहानी गढ़ने की योजना दर्शाई है। अर्थात् पिंजर उपन्यास में विभाजन के दौरान महिलाओं को जो कुछ सहना पड़ा उसका सजीव चित्रण किया है। बहुत ही सशक्त तरीके से अमृता प्रीतम ने अपना तर्क दिया कि विभाजन के दोनों पक्षों पर देश की महिलाओं का उल्लंघन उसी तरह है जैसे विभाजन ने स्वयं राष्ट्र का उल्लंघन किया था। महिलाओं के साथ होने वाला दुर्व्यहार विभाजन का प्रतिबिंब और परिणाम दोनों है। पिंजर अपने अस्तित्व के भाग्य और सामाजिक दुर्व्यवहार के खिलाफ गद्य में महिलाओं की पुकार है। अमृता प्रीतम के कथानक राजनीतिक और सामाजिक हेरफेर के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं यह ऐसी स्थिति है जो चिल्लाती है और नाटकीय और त्वरित बदलाव की गुहार लगाती है। नारी के लिए आजादी की रोशनी जीवन अंधकार बन कर आई है इसी का अमृता जी ने साहित्य में नारी बेहना की छाया तथा इसके विरोध को नारी विमर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है।*

कीवर्ड – *अमृता प्रीतम, उपन्यास, नारी विमार्श*

----------X----------

प्रस्तावना

अमृता प्रीतम के लिए आजादी का मतलब पहले या भावनात्मक आजादी और फिर सामाजिक आजादी। अपने जीवन मे अपने लिए उन्होंने ये दोनों आजादी हासिल की है। वे वर्तमान की उन तमाम दोगली स्त्रीवादी नेताओं, कार्यकताओं से ज्यादा प्रखर दिखाई देती है क्योकि अमृता सिर्फ स्त्री आजादी के लिए लिखती नहीं, बोलती नहीं बल्कि अपने जीवन से अमल भी करती है। अमृता प्रीतम ने पांच बरस लंबी सड़क, पिंजर, अदालत, कोरे कागज, उन्चास दिन तथा सागर और सीपियां उपन्यासों के माध्यम से नारी विमर्श के स्वरों को प्रतीति प्रदान की है। स्त्री इच्छा और विचार अमृता के कार्यो का अभिन्न अंग ही वह निडरता से एक विद्रोही लेखिका थी और वर्णित विषयों पर लिखने से नहीं डरती थी। उनकी लघु कहानियाँ प्रेम और कला पर महिलाओं के दृष्टिकोण के साथ–साथ एक विवश समाज में उनकी दुर्दशा को दर्शाती है। वह उस युग में पुरुषत्व और उसके निर्माण के बारें में लिखने से भी नहीं कतराती थी जब विषाक्त पुरुषत्व के बारे में विचारों ने जोर नहीं पकड़ा था। अमृता प्रीतम ने अपने उपन्यासो में अपने अनुभव विश्व की परस्पर विरोधी चरित्रों, स्थितियों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं और के साथ एक व्यापक फलक पर चित्रित करती है। अमृता प्रीतम के लेखन में एक पीड़ा है ऐसी पीड़ा जो पाठकों की भीतर तक छू जाती है। उनके कथानक पात्रों का आत्मसंघर्ष करना, परिस्थितियों से समझौता न करने की जिद, समाज की कुरितियों के खिलाफ लड़ना, आत्मसम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करना आदि नारी विमर्श की स्थितियों पाठको की अंदर कही छू जाती है और मन को झकझोर देती हैं। अनीता, उपन्यास की नायिका अनीता की जिन्दगी अमृता प्रीतम की ही जिन्दगी का हिस्सा है।

निष्कर्ष

अमृता जी की रचनाओं का अनुवाद हिन्दी एवं पंजाबी के अतिरिक्त भारत की अनेक भाषाओं मे हुए है। इनके अपन्यासों के अध्ययन से यह प्राप्त होता है कि इनके दिव्य चिंतन वाले भारतवर्ष के नागरिक दो मुल्कों में बँट जाते हैं तो उनके लिये शरीर क्या बन जाता है इसकी जीवंत दास्तान है अमृता प्रीतम का उपन्यास 'पिंजर'। पिंजर हिन्दु और मुसलमानों के बीच पलने वाली नफरत की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक ऐसा मर्मस्पर्शी उपन्यास है जो नारी देह के भूगोल तक सिमट गए नए पिशाचों की क्रूरता की शिकार अबलाओं का करून काव्य है। शरीर रूपी पिंजडे मे नारी का शरीर और उसे अपनी वासना की पूर्ति का साधन बनाने वालों के लिए देह ही सब कुछ है, उस देह में अवस्थित नारी की भावनाओं का कोई मूल्य नहीं है। नर–नारी के अटूट संबंधो की और सीपियाँ उपन्यास में वह चेतना सामने आती है जो अपनी जिन्दगी के सवाल को अपने हाथ में ले लेती है। इस उपन्यास पर आधारित 1975 में 'कादम्बिरी' नाम से फिल्म बनी थी। नारी की पीड़ा कैसी होती है इसका अन्दाजा इस उपन्यास से लगाया जा सकता है। नारी कितने कष्टों को सहकर और जहर का घूँट पीकर भी अपने सम्मान की रक्षा करने से नहीं चूकती है। 'अनीता' उपन्यास की नायिका अनीता की जिंदगी अमृता प्रीतम की ही जिंदगी का हिस्सा है। इस उपन्यास में वर्णित घटनाएँ, परिस्थितियाँ आदि भी अमृता जी के जीवन से जुड़ी है जिनका उल्लेख उनकी आत्मकथा एवं साक्षात्कारों में बार–बार होता दिखाई दिया है। :दिल्ली की गलियाँ' उर्फ 'कामिनी' उपन्यास की नायिका कामिनी भी अमृता प्रीतम के व्यक्तित्व का ही हिस्सा हैं। वह अपने जीवन में स्वतंत्रता चाहती है नीजि जिन्दगी में देखल शहाजी से उसे काफी चिढ़ है। अमृता

www.ignited.in

प्रीतम के उपन्यासों में कई ऐसे पात्र है जो सामाजिक जीवन में स्त्री उत्पीड़न का अक्स दिखाते है। नागमणि की अल्का, नीना उर्फ 'घोषला', रंग का पत्ता की कैली, बंद दरवाजा की कम्मी जैसे पात्रों के द्वारा अमृता जी ने स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया है। स्त्री जीवन की पीड़ा, उनके शोषण, दमन और उसके विरुद्ध स्त्री चेतना के संदर्भ में उनका उपन्यास 'उनके हस्ताक्षर' मील का पत्थर है। इस उपन्यास में सात स्त्री पात्रों तथा हवा और जिन्दगी के माध्यम से पूरी दुनिया के, विशेषकर भारत की स्त्रियों के दुख–दर्द की केवल कहानी ही नहीं बल्कि उसके कारणों का भी बारीकी के साथ विश्लेषण किया गया है। स्त्री की जिन्दगी उसकी खुद की नहीं है, वह तो सामाजिक, धार्मिक, नैतिक बंदिशों के बीच केवल है। स्त्री उत्पीड़न की चर्चा करते हुए अमृता एक गुलाम प्रीतम के उपन्यास यह स्पष्ट कर देते हैं कि उनके उपन्यास में स्त्री ही केन्द्रीय पात्र रही है। लेकिन उनके साथ कोई कोई पुरुष अवश्य उसके कंधे से कंधा मिलाता है, सहयोग करता है। उनका लेखन स्त्रीवादी लेखिकाओं की तरह एक पक्षीय नही है बल्कि सामाजिक यथार्थ को उजागर करता है। अमृता लेखन वास्तव में उनके ही समय का नहीं बल्कि आज के समय का भी सच है। वे सिर्फ सामाजिक यथार्थ का चित्रण करके या नकारात्मकता को उजागर करके रुक नहीं जाती बल्कि वे हम सबसे अपील करती है समाज से समस्त बुराइयों को उखाड़ फेकने की। वे अपील करती है धर्म, जाति, समुदाय, शोषण, संघर्ष तथा नारी के अति होने वाले भेदभाव से ऊपर उठकर इंसानी रिश्तों को मजबूत करने की।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, पृ015–16
2. वही, पृ0 18
3. वही, पृ0 19
4. वही, पृ0 20
5. नवभारत, बिलासपुर, शनिवार, 09 मार्च 2013, पृ0 07
6. अमृता प्रीतम, चुने हुए उपन्यास (पिंजर), पृ. 65
7. वही, पृ.83
8. वही, पृ. 91
9. अमृता प्रीतम, सागर और सीपियाँ, पृ. 34
10. वही, पृ. 114
11. अमृता प्रीतम, उनकी कहानी

Corresponding Author

Shalu Parik*

Research Scholar, Jyoti Vidyapeeth Mahila Vishwavidyalaya, Jaipur, Rajasthan, India

Email: shalusoni201291@gmail.com